

प्रकाशक:—

चतुरसेन गुप्त,

प्रबन्धक:—

महाभारत कार्यालय

दिल्ली ।

## ॥ राजधर्म ॥

प्रजामुखे मुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्

नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्

अर्थ—प्रजा के मुख में मुख और प्रजा के हित में ही राजा को अपना हित समझना चाहिए । बात तो यह है, कि राजा को अपना प्रिय और हितकारी कोई कार्य पृथक् नहीं है । प्रजा प्रिय और हितकारी कार्य ही राजा का प्रिय और हितकर कार्य है ।

(कौटिलीय अर्थशास्त्र १८-१६-३६)

मुद्रक:—

डा० प्यारेलाल गुप्त

L. M. P. I.

वैदिक प्रेस, शामली, यू० पी०

# REFERENCE

## BOOK

### भूमिका

राजपूताने के प्रसिद्ध विद्या प्रेमी रईस

श्रीमान् रावबहादुर ठा० नरेन्द्रसिंह जी  
जोबनेर नरेश एवं शिक्षा सचिव जयपुर राज्य

नीति का सूर्य, भारतीय संस्कृति का ध्रुव तारा, परम प्रतापी, नन्दवंश वन कुशान और गुप्त साम्राज्य नौका का पतवार परम पुरुष विष्णुगुप्त चाणक्य जो भारतीय रत्न मञ्च पर इस और कई नामों और कौटल्यादि कई उपटंक से सम्बोधित किये जाते हैं। उस महा पुरुष का यह अर्थशास्त्र ग्रन्थ एक जीता जागता नमूना है, और आज भी पूर्वीय और पाश्चात्य संसार में इसकी टक्कर का जाज्वल्यमान रत्न कोई नहीं है, उस ग्रन्थ को सर्व साधारण के हाथों उपलब्ध होने की महाभारत कार्यालय मुद्रण करा रहा है यह महर्घ प्रयास बड़ा आदरणीय है।



नरेन्द्रसिंह (रावबहादुर)

शिक्षा सचिव, जयपुर राज्य

## प्राक्कथन

ईसवी सन् से ३२७ वर्ष पूर्व, ग्रीक विजेता, महान् सिकन्दर, एशिया माइनर, मिश्र, फारस, अफगानिस्तान और अस्तकनियों की राजधानी मस्साग को जीतता हुआ एक लाख बीस हजार सेना लिए हुए हिन्दूकुश के मार्ग से भारतवर्ष में आ हुआ। तक्षशिला का राजा आम्बीपोरस ( पुरु ) से ईर्ष्या रखता था, इससे यह सिकन्दर से मिल गया। दोनोंने पोरस पर आक्रमण किया। यद्यपि पोरस इस युद्ध में पराजित हो गया, पर उसकी वीरता की छाप यूनानियों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लग गई।

इस समय भारत का सब से बड़ा शक्तिशाली राजा महानन्द था, जिस राजधानी पाटलिपुत्र ( पटना ) थी। सिकन्दर की इस पर आक्रमण करने की हिम्मत हुई और यह मैसिडोनिया का शक्तिशाली शासक, अपनी महत्वाकांक्षाओं को अपने मन लेकर पञ्जाब के छोटे २ राज्यों से युद्ध करता हुआ सिन्ध नदी से पार होकर भारतवर्ष बाहर निकल गया। इन छोटे २ राज्यों के साथ युद्ध करते समय सिकन्दर एक स्थान पर बुरी तरह फँस गया। उसके बहुत से घाव आए। ये घाव अभी अच्छे भी नहीं हो पाये थे, कि यह यूरोपीय विजेता तेतीस वर्ष की अवस्था में ही बेविलोनिया में मर गया।

जिस समय सिकन्दर का यह आक्रमण हुआ, ठीक उसी समय तक्षशिला के विश्व विद्यालय में आचार्य विष्णुगुप्त ( चाणक्य ) अध्यापन का कार्य करते थे और भावी मौये सम्राट् चन्द्रगुप्त, इनके छात्रों में एक सुयोग्य छात्र थे। यद्यपि सिकन्दर भारतवर्ष से लौट गया, तो भी आचार्य चाणक्य ने अपनी तीव्र दृष्टि से यह देख लिया, कि यह यूनानी विजेता, फिर भारतवर्ष पर वेग के साथ चढ़ाई किये बिना न रहेगा, भारत में फूट का साम्राज्य है। छोटे २ गण राज्य यूनानियों के आक्रमण रोकने में असमर्थ हैं। यह विचार कर इसने अपने योग्य शिष्य वीर केशरी चन्द्रगुप्त पर हाथ रखा और इस समय इसे तक्षशिला के सहित सारे पञ्जाब का शासक बना दिया।

नन्दवंश के उद्वेग शासकों से भारतीय प्रजा तंग आ रही थी। चाणक्य ने देख कि राजा और प्रजा के इस असहयोग में यूनानियों का मुकाबिला कौन कर सकता है। इसने नन्दवंश को समाप्त किया, और मगध के विशाल साम्राज्य पर अपने शिष्य महान् चन्द्रगुप्त को स्थापित कर दिया।

सिकन्दर के देहान्त के बाद उसका सेनापति सैल्यूकस, मैसिडोनियन का सम्राट बना। इसने ईसवी सन् से ३०६ वर्ष पूर्व, मगध सम्राज्य पर आक्रमण किया। यूनानी सम्राट, सैल्यूकस पराजित हुआ। इसने सिन्धु नदी के पार का सारा प्रान्त चन्द्रगुप्त को भेंट कर दिया और अपनी पुत्री कार्नेवालिया (हेलेन) का विवाह मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया।

इस समय सारे संसार पर यूनानी जाति की धाक थी। यह विजेता जाति, जो को सबसे अधिक सभ्य मानती थी, परन्तु इनके भी विजय कर लेने से भारत का महिमा की तरह आज तक बड़े गर्व के साथ ऊंचा उठा हुआ है, जिसका सारा अर्थ, अर्थशास्त्र के रचयिता महाविद्वान् मन्त्री चाणक्य को है, इसमें किसी को मत नहीं है।

प्राचीन देशों को अपनी प्रचलित शासन प्रणाली पर बड़ा गर्व है। वे समझते हैं कि राजा, मन्त्री, दूत, भूमि कर (माल) चुंगीकर, पुलिस, गुप्तचर विभाग (पुलिस) व्यापार, जहाज जंगलात, खान, शराब, वेश्या, कम्पनी, चौर डकैतों के पकड़ने के उपाय, दायभाग, जुआ, जालीसिक्के, सेना, व्यूह निर्माण, शत्रु के घात प्रयोग, रक्षा के उपाय आदि के नियम जैसे-इनको ज्ञात है, वैसे आज तक किसी को नहीं मालूम हुआ, परन्तु योंही उन्होंने इस अर्थशास्त्र को देखा, वे मुंह में अंगुली दबा कर भौंचढ़ होकर देखते रह गए। महाभारत का यह दावा, कि “यदिहास्तितदन्यत्रयन्नेहास्तिततत्काले” अर्थात् जो महाभारत में है, वही सब जगह मिलता है और जो इसमें नहीं वह कहीं नहीं मिल सकता है। ठीक यही दावा-राज्य व्यवस्था के विषय में इस कौटिलीय अर्थशास्त्र का होना चाहिए। आश्चर्य तो यह है, कि आज कल की सी दुनियां आज से द्वादश वर्ष पूर्व भी ऐसी की ऐसी विद्यमान थी। यह जब की बात है, जब भारत से अति-अन्य देश विकृत अन्धकार के गह्वरे में पड़े थे।

हमारा साम्राज्य क्या था। भारत किस प्रकार अपनी स्वतन्त्रता के सुख का उपभोग कर रहा था। यद्यपि आज यह सब कुछ स्वप्न सा हो गया-तो भी इस अर्थशास्त्र ने इस गुलामो में भी हमारे मस्तक को संसार में ऊंचा उठा दिया है। बात तो सच यह कि साम्राज्य से कोई जाति की प्रतिष्ठा या रक्षा नहीं हो सकती। जाति की प्रतिष्ठा रक्षा का साधन तो केवल साहित्य ही है। इसी सचाई के आधार पर एक बार लार्ड ने कहा था, कि “यदि ब्रिटिश साम्राज्य और शेक्सपियर में से मुझे एक लेना में निःसन्देह साम्राज्य को तिलाञ्जलि देने को प्रस्तुत हूंगा”। हमारे पास भी हमारा साम्राज्य नहीं है, परन्तु हमारी जाति की प्रतिष्ठा और मान के बचाने को



अनुपम साहित्य रत्न बचे हुए हैं, जिनमें यह अर्थशास्त्र एक चमकता हुआ  
रत्न है।

जिस जाति को नष्ट करना होता है, उसका साहित्य नष्ट किया जाता है। हिन्दू  
जो को नष्ट करने वालों ने भी इनके साहित्य भण्डार से वर्षों हम्माम गर्म करवाये।  
हजार वर्ष पूर्व के प्राचीन हिन्दू साम्राज्य के चित्र उपस्थित करने वाला यह बहुमूल्य,  
भी नष्ट हो चुका था। यह हमारे कोई सोभाग्य की बात थी, कि बहुत खोज करने  
इंग्लैंड में सन् १६०६ में एक कापी इस अर्थशास्त्र की मिल गई, जो आज आपके हाथमें  
रही है।

साहित्य पर जाति के जीवनकी आधारशिला किस प्रकार रखी हुई है—इस बात  
प्राज्ञ हमारी परतन्त्र जाति भूल गई। साहित्य का मूल्य लार्ड कर्जन के उपर्युक्त  
गणित भरा है। बात तो सच यह है, कि पाश्चात्य देशवासियों ने उन्नति ही एक इस  
से की है, कि वे अपने साहित्य का मूल्य जानते हैं। मिल्टन के पुस्तक लिखने की  
ही को आज भी सब लोग आदर की दृष्टि से देखते हैं, परन्तु कौन भारतीय बता  
ता है, कि चाणक्य ने किस भौंपड़ो में बैठकर इस अर्थशास्त्र को लिखा था।

यूरोप में आज घमसान युद्ध जारी है। इसमें अनुपम अस्त्र शस्त्रों के अतिरिक्त  
भी धुआँ (गैस) का प्रयोग होता है, जिससे किसी को अन्धा बना दिया जाता है  
को सुला दिया जाता है, किसी को मार दिया जाता है और कहीं पर आग लगा दी  
है। चाणक्य कहते हैं।

कृतकण्डलकृकलास गृहगोलिकान्धाहिक धूमो नेत्रवधमुन्मादं च करोति  
(अर्थशास्त्र १४१-२०)।

अर्थात्—कृत कण्डल, गिरगट, छिपकली, और दुमई साँप के अर्क का धुआँ, अंधा  
पागल बना देता है।

शतकर्मोचिदिङ्गकरवीर कटुतुम्बीमत्स्य धूमो.....यावच्चरतितावन्मारयति  
(अर्थ १४-१-१०)

अर्थात्—शतावरी आदि के योग से बनाये हुए नुसखे का धुआँ जितनी दूर  
जितनी दूर तक मारता चला जावेगा।

विद्युत् प्रदग्धोऽङ्गारो.....निष्प्रतीकारोदहति (अर्थ १४-१-३६)

अर्थात्—विजली के जले हुए वृक्ष के कोयले से जो आग लगाई जाती है, वह  
नहीं जा सकती है।

एकाम्लकं वराहाक्षि खद्योतः कालशारिवा एतेनाभ्यक्तनयनो रात्रौरूपणि  
पश्यति (अर्थ० १४-३-३)

अर्थात्—एक बड़हल सूअर की आंख, जुगनू, काला शारिवा को मिलाकर आंख  
में आंजे-तो मनुष्य रात में भी देख सकता है।

एकां गुलिकामभिमन्त्रयित्वा यत्रैतेन मन्त्रेणक्षिपति—तत्सर्वं प्रस्वापयति  
(अर्थ० १४-३-३१)

अर्थात्—इस गोली को जहां डाले वहां सब सो जाते हैं। इस प्रकार के प्रयोग  
हैं। आज हम परतन्त्र होने से उनके परीक्षण करने में भी असमर्थ हैं, परन्तु एक  
समय था, जब हम इन सबको अच्छी तरह जानते थे। इनमें कहीं २ मन्त्रों का प्रयोग  
आचार्य चाणक्य की अस्तिकता को सूचित कर रहा है।

महाभारत में शकट व्यूह, वज्रव्यूह, चक्रव्यूह, सूची मुख व्यूह आदि अनेक व्यूहों  
का वर्णन है, परन्तु उनके निर्माण का क्रम आप इसी अर्थशास्त्र में देख सकोगे।

भारतवर्ष का सबसे पहला यही अर्थशास्त्र नहीं है। इससे पूर्व भी पिशुनाचार्य  
उद्वय, बृहस्पति, उशनस, भारद्वाज आदि के अनेक अर्थशास्त्र थे, जिनका उल्लेख इसी  
अर्थशास्त्र में स्थान २ पर आता है आज वे लुप्त हो चुके। केवल यही अर्थशास्त्र जैसे  
तेसे मिला है। इस अर्थशास्त्र को पढ़कर श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू नैनी जेल में मुग  
ठठे थे। उन्होंने सन् १९३१ में जेल से ही अपनी पुत्री इन्दिरा के नाम दो पत्र इस अर्थ-  
शास्त्र के गौरव के प्रकट करने को लिखे हैं, जो विश्व इतिहास की झलक नामक  
ग्रन्थ में प्रकाशित हैं।

पाश्चात्य देश में मैकियावेली कूटनीति का आचार्य माना जाता है। इसका मत है,  
कि जहां तक हो सके—ऊपर से साधु वेश बनाये रहो और समय पर धर्म-अधर्म कुछ न  
देखकर फौरन दूसरे को दबोच दो। सदा मखमली दस्ताने में फौलाद का पज्जा रखो—इत्यादि  
ढंग का इसका मत है। बहुत से लोगों ने चाणक्य को भी भारत का मैकियावेली बताया  
है। हमारी सम्मति में यह चाणक्य के साथ अन्याय है। आचार्य चाणक्य धर्मात्मा  
व्यक्ति हैं, वे बलवान् दुष्ट शत्रु के साथ ही कूटनीति का प्रयोग करके अपने देश की  
स्वतन्त्रता की रक्षा करना चाहते हैं। वे साधु पुरुष के साथ कूटनीति के प्रयोग को पा  
मानते हैं। ये सम्राट-निर्माता होकर भी त्यागी ब्राह्मण की भांति कुटिया में रहते औ  
चावल तथा सत्तु से भूख मिटाकर विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। वे कहते हैं—

तरमात्स्वधर्मं भूतानां राजा न व्यभिचारयेत् स्वधर्मं । सन्दन्यानोहि प्रेत्य  
लिस जाति ह्येव नन्दति (अर्थ० १-३-१६)

को नष्ट करे । अर्थात्—राजा-प्रजा को अपने धर्म से न्युत्र न होने दे । राजा भी अपने धर्म का  
हजार वर्ष पश्चात्करण करे । जो राजा, अपने धर्म का इस भाँति आचरण करेगा—वह इस लोक और  
भी नष्ट हो । परलोक में सुखी रहेगा ।

विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां विनयेतः अनन्यां पृथिवीं भुङ्क्ते सर्वभूत  
रही है । हितैरतः (अर्थ० १-५-१८)

साहित्य पर— अर्थात्—सुशिक्षित राजा-प्रजा को सुशिक्षित बनाना हुआ और प्रत्येक के हित में  
पाज हमारे उत्तर हुआ राज्य का उपभोग करे । इस प्रकार कार्य करने वाला राजा शत्रु रहित होकर  
गने भरा है विशाल पृथ्वी के उपभोग करने में समर्थ होता है । एक स्थान पर तो आचार्य लिखते हैं—  
से की है ।

एवं दृष्येष्वधार्मिकेषु वर्तते नैतरेषु (अर्थ० ५-२-८०-८१)  
की को अर्थात्—यह सब कुछ दृष्टनीति, अधार्मिक लोगों के साथ बरतनी चाहिए, सज्जनों  
ता है, कि नो

यूरोप में के ऊपर इसका कभी प्रयोग न करे, परन्तु मैक्रियावेली-सज्जन दुर्जन, धार्मिक अधार्मिक  
भी धुंधला (सज्जनों को नहीं जानता, वह सबके साथ दृष्टनीति का प्रयोग करके मैक्रियावेली समता  
को सुलभ बनाता है । उसे चाणक्य की भी कुटी पसन्द नहीं आ सकती । इन सब बातों के देखने  
है । चाणक्य हमारी सम्मति में तो चाणक्य और मैक्रियावेली के सिद्धान्तों में आकाश पाताल का  
कृतकाल-तर है ।

शशास्त्र हमने इस कठिन ग्रन्थ की गुत्थियाँ खोलने का व्याशक्ति प्रयास किया, परन्तु  
अर्थात्—साधन न होने से हम उसमें पूर्ण सफल नहीं हो सके तो भी बहुत सी त्रुटियाँ हमने नहीं  
र पागल बन गये हैं । यह ग्रन्थ हमारे परोक्ष में दूसरे नगर में छपा है— इस से प्रकृ आदि की  
शतक कुछ अशुद्धि हों तो पाठक क्षमा करके हमें अनुगृहीत करेंगे ।

अर्थ० १४-१ आवण पूर्णिमा  
अर्थात्—१६६७ विक्रमी  
ज्येष्ठ दश  
विद्युत्  
। अर्थात्—  
नहीं जा



गङ्गाप्रसाद शास्त्री  
दिल्ली ।

# कौटलीय अर्थशास्त्र की विषयानुक्रमणिका

## विनयाधिकारिक

अध्याय	विषय	पृष्ठ	अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	राजवृत्ति	१	२	विद्या समुद्देश	६
३	त्रयी स्थापना	१०	४	कृषि पशुपालन और व्यापार	१२
५	वृद्ध संयोग	१४	६	काम आदि ६ शत्रुओं का त्याग	१६
७	राजर्षि का व्यवहार	१८	८	अमात्यों की नियुक्ति	१८
९	मन्त्री और पुरोहितों की नियुक्ति	२२	१०	अमात्यों के हृदयगत सरल और कुटिल भावों को गुप्तरोति से जानने के प्रकार	२४
११	गुप्तचरों (C. I. D) की स्थापना	२८	१३-१४	शत्रु के वहकावे में न आने के उपाय	३५
१२	गुप्तचरों की कार्यों पर नियुक्ति	३१	१६	राजदूतों की नियुक्ति	४८
१५	मन्त्राधिकार	४२	१८	राजकुमार के कर्तव्य	५८
१७	राजपुत्रों से राजा की रक्षा	५३	२०	राजभवन निर्माण	६५
१९	राज प्रणिधि	६१			
२१	आत्म रक्षा	६६			

## अध्यक्ष प्रचार

१	जन-पद-निवेश	७५	२	बंजर भूमिका उपयोग	८०
३-४	दुर्ग (किले) बनाने का विधान	८३	५	राजकीय वस्तु	८३
६	समाहर्ता (कलक्टर) के कार्य	८६	७-८	आय-व्यय का स्थान	१००
९	छोटे २ कर्मचारियों पर अध्यक्ष	१११	१०	शासनाधिकार	११५
११	कोश में प्रवेश करने योग्य रत्नों की परीक्षा	१२१	१२	खानों का वर्णन	१३१
१३	सुवर्णाध्यक्ष का कार्य	१३७	१४	सराफे के बाजार का प्रबंध	१४३
१५	कोष्ठागाराध्यक्ष (धान्य आदि)	१४६	१६	पश्याध्यक्ष (बेचने और खरीदने)	१५६
१७	कुश्याध्यक्ष [चंदन की लकड़ी आदि]	१५६	१८	आयुधागाराध्यक्ष [शस्त्र भंडार]	१६१
१९	तोल माप का संशोधन पौतवाध्यक्ष	१६४	२०	देश और काल का परिमाण	१६१
२१-२२	शुल्काध्यक्ष [चुंगी का अफसर]	१७६	२३	सूत्राध्यक्ष [रेशम, ऊन और सूत का महकमा]	१७७
२४	सीताध्यक्ष [हल से उत्पन्न वस्तु]	१८१	२५	सुराध्यक्ष	१८८



विषय	पृष्ठ	अध्याय	विषय	पृष्ठ
सूनाध्यक्ष	१६१	२७	गणिकाध्यक्ष	१६२
नावाध्यक्ष	१६७	२६	गोऽध्यक्ष	२०१
अश्ववाध्यक्ष	२०७	३१	हस्त्यध्यक्ष	२१३
रथ, पैदल सेनाध्यक्ष	२१६	३४	मुद्राध्यक्ष [मुहर लगाने]	२२१
समाहर्ता [कलक्टर]	२२२	३६	नागरिक [नगर का प्रबन्धक]	२२५

### धर्मस्थीय

दीवानी और कौजदारी	२-३-४	विवाह कानून	२३८
मुकदमे संबंधी विचार	२३२	५-८ दायभाग (घटवारा)	२५१
वस्तु विक्रय	२६३	१० पशुवों के चारागाह आदि	२६७
कर्ज लेना और देना	२७१	१२ धरोहर	२७७
मजदूरों का विषय	२८२	१५-१६ बेचने और नहीं बेचने सम्बन्धी	
हकैती	२६७	वाद विवाद	२६१
गाली गलौज	२६६	१६ मारपीट	३०१
जुआ तथा अन्य अपराधों			
का वर्णन	३०५		

### कंटक शोधन

कारुक रक्षणम् अर्थात् घोवी	२	व्यापारियों से प्रजा की रक्षा	३१५
रंगरेख, सुनार, वैद्य तथा	३	दैवी आपात्तियों से प्रजा की रक्षा	
नट आदि सम्बन्धी नियम ३०६		करने के उपाय	३१८
प्रजा पीढियों से रक्षा	६	चोरों की पहिचान आदि	३२७
करने के नियम, गुप्तचरों का	७	आशुमृतक परीक्षा (कतल)	३३२
साधु ग्योतिषी आदि के भेष	८	अपराधी और गवाहों का वर्णन	३३६
धनाना ३२२	९	राजकर्मचारियों के स्थानोंकी पड़ताल	३३६
अपराधी को अङ्ग छेदन	११	लड़ाई मझाड़ों का वर्णन	३४८
की सजा ३४४	१२	कन्या संबन्धी अपराधों का वर्णन	३५०
अभक्ष्य भक्षण के संबंध			
में राज नियम ३५४			

अध्याय	विषय	पृष्ठ	अध्याय	विषय	पृष्ठ
<b>योग वृत्त</b>					
१	राज कर्मचारियों का कंटक पन	३६०	२	राज्यकोश बढ़ाने का उपाय	३६६
४-५	मन्त्री आदि का राजा के प्रति व्यवहार	३७८	३	भृत्यों के भरण पोषण की विधि	३७३
			६	राजा पर आने वाली विपत्ति और उनका प्रतिकार	३८४

### मण्डल योनिः

१	राजा के मन्त्री आदि के गुणों का वर्णन	३६०	२-३	शांति और लघोग की विधि	३६२
---	---------------------------------------	-----	-----	-----------------------	-----

### पाठ गुण्य

१-२	वृद्धि और क्षय का वर्णन	३६८	३-६	शत्रु के साथ युद्ध और सन्धि	४०५
१०-११	भूमि सन्धि का वर्णन	४१४	१२	कर्म सन्धि	४६३
१३	आक्रमणकारी राजा का कर्तव्य	४५७	१४	अपनी हीन शक्ति को पूरा करने का उपाय	४५७
१५	दुर्बल राजा और बलवान राजा	४६८	१६	पराजित राजा के साथ व्यवहार	४७३
			१७-१८	सन्धि विषयक वर्णन	४७७

### व्यसनाधिकारिक

१	राजा पर आने वाली विपत्तियों का वर्णन	४६०	२	राज्य पर आने वाले संकट	४६६
४	राष्ट्र की पीड़ा-राज्य कोश का वर्णन	५०५	३	पुरुषों पर विपत्तियाँ	४६६
			५	अपनी सेना और मित्रों पर आने वाला संकट	५१२

### अभियास्यत्कर्म

१	बल और निर्बलता का वर्णन	५२०	२	सेना की तय्यारी	५२५
४	सेना का नाश, धन धान्य की हानि	५३६	३	विजय यात्रा के लिए चढ़ाई	५३०
७	संशय	५५१	५	बाहरी और भीतरी आपत्तियाँ	५४०
			६	दुष्ट प्रजाजन और शत्रुओं का प्रतिकार	५४०

### सांग्रामिक

१	सेना की छावनी	५६१	२	सेना का प्रस्थान	५६०
---	---------------	-----	---	------------------	-----

विषय	पृष्ठ	अध्याय	विषय	पृष्ठ
सेना को प्रोत्साहन	५६७	४-५	युद्ध के योग्य भूमि, हाथी, अश्व	
दण्ड, व्यूहों एवं प्रति व्यूहों			रथ आदि के कार्यों का वर्णन	५७१
का वर्णन	५८४			

### संघ वृत्त

भेद के प्रयोग और गुप्त-चुप मारण के उपायों का वर्णन	५८७
--	-----

### आवलीयसं

राजदूत के कर्मों का वर्णन	५६४	२	बुद्धिमता से युद्ध करने के उपाय	
शत्रु के सेनापतियों के वध		५	शत्रु सेना को अनेक उपायों से	
का दण्ड	६०१		वश में करना	६०६

### दुर्गलिम्भोपाय

शत्रु के दुर्गों को प्राप्त		२	शत्रु को कपट द्वारा दुर्ग से बाहर	
करने का उपाय	६१५		निकालना	६१६
गुप्तचरों (C. I. D.) को		४	शत्रु के दुर्ग पर अधिकार करना	६३०
शत्रु के देश में रखने का		५	जीते हुए प्रान्तों में शांति स्थापना	
वर्णन	६२४		करना	६३८

### औपनिषदिक

शत्रु के मारण लिए औप-		२	औपधियों से भूख प्यास नष्ट करने	
धियों के प्रयोगों का वर्णन	६४१		आकृति बदलने या आकृति परिवर्तन	
अद्भुत औपधियों और			द्वारा, शत्रु को भूल भुलैया में डालने	
मन्त्रों का वर्णन	६५४		का वर्णन	६४८
शत्रु द्वारा किये गए आघा-				
तों का प्रतीकार	६६४			

### तन्त्र युक्ति

अर्थ शास्त्र के शब्दों की परिभाषा	६६७
-----------------------------------	-----

## चाणक्य प्रणीत सूत्रम्

६७४ से ६६६ तक

\* इति \*